हैदराबादका जमीनका सवाल

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक २७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १ सितम्बर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

रिश्वतखोरी

अभी कुछ दिन हुअे, श्री राजगोपालाचार्यके अेक भाषणकी रिपोर्ट मेरे देखनेमें आओी। भाषणको पढ़कर अैसा मालूम होता है मानो राजाजी सरकारी नौकरोंकी रिश्वतखोरीका बचाव करते हैं। वे लगभग अैसा कहते दीखते हैं कि सरकारी नौकरोंको अुनकी अिस कमजोरीके लिअे दोष देनेके बजाय हमें अुन पर दया करनी चाहिये। अुनकी दृष्टिमें सारा दोष अुस चरित्रहीन जनताका है, जो कि अुनके सामने अपने स्वार्थ साधनेके लिअे प्रलोभन रखती है। सरकारी नौकर दूसरे दुर्बल मनुष्योंकी तरह अिन प्रलोभनोंका शिकार भर हो जाते हैं; आखिर अुन्हें भी जीवनके लिअे संघर्ष करना पड़ता है और अिस मुश्किल दुनियामें अपना पेट भरना पड़ता है।

निचली श्रेणीके अुन सरकारी नौकरोंकी आर्थिक कठिनाअियोंके लिअे, जिन्हें पर्याप्त वेतन नहीं मिलता, हरअेक आदमी हमदर्दी महसूस करेगा। लेकिन कोअी सरकारी नौकर लांच-रिश्वत ले, अिसका बचाव कोअी कभी नहीं कर सकता; सरकार तो हरगिज नहीं कर सकती। अुन्हें पर्याप्त वेतन मिलता है या नहीं, यह देखनेका काम सरकारका है। और अगर वह अिस बातकी जांच आंख खोलकर करे, तो अुसे पता लगेगा कि कअी महकमोंमें अुसके बिलकुल अूपरी और निचली श्रेणीके नौकरोंके वेतनोंमें १:७५ से लगाकर ९० तकका अनुपात है। जाहिर है कि यह अंतर बहुत ज्यादा है और अिसे बहुत कम कर देना चाहिये। अिस विषमताको जारी रखनेमें कोअी औचित्य नहीं है। दूसरे, अगर हम सब बातोंका खयाल करें, तो सरकारका कमसे कम वेतन पानेवाला नौकर भी अुसी श्रेणीके गैरसरकारी काम करनेवाले आदमीके बनिस्बत ज्यादा पैसा पाता है। अिस श्रेणीके अधिकांश आदमी किसानों, घरू नौकरों और छोटे-छोटे मुंशियोंके वर्गसे आते हैं। वे सरकारी नौकरी पसन्द करते हैं, क्योंकि अुन्हें ज्यादा पैसा मिलता है, नौकरी ज्यादा सुरक्षित होती है और समाजमें कुछ सम्मान भी मिल जाता है। सरकार अुन्हें ज्यादा पैसा देती है, अुसका कारण यह बताया जाता है कि अिससे अुसे योग्यतम आदमी मिलते हैं। यह अलग बात है कि सरकारका यह अुद्देश्य हमेशा पूरा नहीं होता, क्योंकि नियुक्तियां जिनके हाथमें होती हैं वे पक्षपात करते हैं और भ्रष्टाचारको प्रश्रय देते हैं। लेकिन अिसका तो यह मतलब हुआ कि सरकारी नौकरीमें अयोग्यताको भी, गैरसरकारी नौकरियोंमें योग्यताकी अपेक्षा, ज्यादा अच्छी कीमत मिलती है। अिसलिअे अिससे तो यह सिद्ध होता है कि सरकारी नौकरियोंमें लांच-रिश्वतका कोअी औचित्य नहीं हो सकता।

अिसके सिवाय, सरकारी नौकरोंको भला जनता क्यों भ्रष्ट करगी? रिश्वत ब्राह्मणको दी गअी दक्षिणा, या भिखारीको दी गअी भीखकी तरह परलोकमें पुण्य कमानेके लिअे नहीं दी जाती। और अुन लोगोंके भ्रष्टाचारका क्या कारण है, जिन्हें ३०० रुपयोंसे लेकर ढाअी हजार रुपया प्रतिमाह मिलता है तथा अूपरसे डटकर भत्ता मिलता है सो अलग?

जनताके जो लोग सरकारी अधिकारियोंको अिसलिअे रिश्वत देते हैं कि वे अुन पर कुछ अनुचित मेहरबानी करें, अुनका हमें बचाव नहीं करना है। यह सच है कि बेअीमान लोगोंका अेक अैसा वर्ग है, जो अितने बड़े-बड़े प्रलोभन पेश करते हैं कि कभी-कभी किसी माननीय मंत्रीको भी अुनका तिरस्कार करना कठिन हो जाता है! लेकिन अिसे रिश्वत लेनेवाला अपने बचावमें पेश नहीं कर सकता।

वर्धा, १३-८-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

शिवरामपल्लीमें विनोबा

१२

(१०) ता० ११/१२-४-'५१: समाजवादी मित्रोंके साथ: समाजवादी मित्र शिवरामपल्लीमें विनोबासे दो बार मिले। परिचय आदिके बाद कुछ वार्तालाप भी हुआ। पहला सवाल अुन्होंने भारत सरकारकी वर्तमान युद्ध-नीतिके बारेमें पूछा। भारत सरकार अगर गांधीजीकी रहनुमाअीमें चलनेका दावा करती है, तो फिर वह सेना कैसे रख सकती है, अुसे क्यों नहीं डिसबॅन्ड कर (तोड़) देती? अिस आशयके अुनके सवालका जवाब देते हुअे विनोबाने कहा:

"आप लोग जानते हैं न कि गांधीजीके रहते ही भारतीय फौजें कश्मीर फ्रंट (सीमा) पर बचावके लिअे गअी थीं? और गांधीजीने विरोध नहीं किया था? आखिर हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि भारतीय सरकार भारतीय जनताकी प्रतिनिधि है और वह आम जनताकी शक्तिके अनुसार ही काम कर सकती है। मैंने यह कअी बार कअी अुदाहरण देकर समझाया भी है। जनताको आगे ले जानेका काम तो सुधारकोंको करना पड़ता है। और सुधारकके नाते हम तो यही कहेंगे कि हृदय शुद्ध और प्रेममय रखो, डर छोड़ो, और सारी फौज डिसबेंड कर (तोड़) देनेकी परिस्थिति पैदा करो।"

परिस्थिति पैदा करना यानी लोक-मानसको सुशिक्षित करना। अिसमें से आगामी चुनावोंकी चर्चा निकली। तब अिन मित्रोंने पूछा:

प्र० : वोटिंगके लिअे आप क्या कसौटी रखेंगे? क्या किसी पक्ष-विशेषको मत देना पसंद करेंगे?

www.vinoba.in

विनोबा: अिस बारेमें भी हमने कहा है। हर अुम्मीदवारको पहिले ठीक पहचानो। मनुष्य अच्छा है, तुम्हारे मेनिफेस्टोको मानता है, तो अुसे वोट दे सकते हैं, बशर्ते कि अुसके अिर्दगिर्दके लोगोंका भी अुस पर विश्वास हो। जो लोग अुसे जानते हैं, वे अगर अुस पर विश्वास नहीं करते, तो अुसे वोट नहीं देना चाहिये। फिर चाहे वह किसी पक्ष-विशेषका हो या किसी विशिष्ट तत्त्वप्रणालीके प्रति अपनी वफादारी ही क्यों न बताता हो। अब अिसके आगे अंधमतदान हरगिज नहीं चलनेवाला है और न चलना ही चाहिये। बात असल यह है कि कांग्रेसवाले जनताको अपने कार्यक्रमके संबंधमें आवश्यक तालीम देना नहीं चाहते; अपनी तत्त्वप्रणाली लोगोंको समझानेकी तकलीफ अुठाना नहीं चाहते। पार्टीके अर्जित पुण्य पर चुनाव लड़ना चाहते हैं। यह ठीक नहीं है।

फिर ग्रामसेवाके संबंधमें कुछ चर्चा हुअी। वर्धासे हैदराबाद तककी अपनी पैदल यात्रामें विनोबाने अनेक गांवोंका निरीक्षण किया था। हैदराबादके गांवोंकी दृष्टिसे सेवाका कोअी विशेष कार्यक्रम विनोबा सुझा सकेंगे, अिस आशयसे मित्रोंने पूछा:

प्रश्न: यहांके गांवोंमें काम करनेके लिअे आप अुत्तम कार्यक्रम क्या समझते हैं?

विनोबा: कल ही मैंने चर्चाके सिलसिलेमें बताया कि कर्नाटक और महाराष्ट्रमें जैसी लोक-जागृति दिखाअी देती है, वैसी यहां तेलंगानामें नहीं दिखाअी देती। यहांके गांवोंको देखने पर मेरे ध्यानमें आ गया कि अिसका कारण यह सिंदी ही है। सिंदीकी बुराअियोंसे मैं पहले अपरिचित था अैसा नहीं। परंतु यहां यह बुराअी अितनी गहरी जा पहुंची होगी, अिसका मुझे अितना अंदाज नहीं था। अिसलिअे मेरे खयालमें यहांका सबसे अहम मसला यही है। कार्यकर्ताओंको अिस काममें जुट जाना चाहिये। सब पार्टियोंके लिअे यह अेक कॉमन (समान) प्रोग्राम है। पर आजकल कार्यकर्ताओंको यह प्रोग्राम नहीं जंचता, क्योंकि वह रिवोल्यूशन (क्रांति)का नहीं, रिफॉर्म (सुधार) का समझा जाता है। अुन्हें तो अैसा प्रोग्राम चाहिये, जिससे असंतोष पैदा हो सके।

प्रश्न: लेकिन हमारे यहां जमींदारीका मसला सिंदीके मसलेसे ज्यादा अहम है। जमींदारीके कारण ही यह कम्युनिज्म फैला है।

विनोबा: कम्युनिज्म तो अिसलिअे फैल सका है कि दूसरे लोगोंने कोअी काम ही नहीं किया है और कम्युनिस्टोंने किया है।

प्रश्न: लेकिन कम्युनिस्टोंने रचनात्मक काम क्या किया है?

विनोबा: रचनात्मक काम अुनकी विचारप्रणालीमें ही नहीं है। वे तो जनताके असंतोषसे लाभ अुठाना चाहते हैं। और असंतोष भी थोड़ी मात्रामें हो, तो अुन्हें पसंद नहीं — अिसलिअे असंतोषको वे बढ़ाना भी चाहेंगे। लोगोंको राहत मिले, अैसा कोअी काम वे नहीं चाहते।

फिर मूल प्रश्न 'कार्यक्रम' के बारेमें कहा:

"यात्राके दरमियान हमने गांव-गांवमें पूछा कि यहां कोअी अुद्योग चलते हैं क्या? तो जवाब यही मिला कि खेतीके सिवा और कोअी अुद्योग नहीं है। अिसलिअे आपको तीन प्रकारका काम अेकदम शुरू करना चाहिये: सिंदीबंदी, ग्रामोद्योग और कष्ट-निवारण — यानी लोगोंकी दैनंदिन तकलीफोंको हल करनेकी कोशिश।"

* * *

शिवरामपल्लीके सर्वोदय संमेलनके बारेमें भी अिन मित्रोंको कुछ असंतोष था। अुन्होंने कहा: "आपके संमेलनमें तो कांग्रेसवाले ही ज्यादा नजर आते हैं?" तब विनोबाने कहा: "कांग्रेसवालोंको हमने बुलाया तो है नहीं। आप चाहें तो आप भी आ सकते हैं। यहां जो आते हैं, वे सर्वोदय समाजके सेवक होते हैं। न तो वे कांग्रेसवाले होते हैं, न सोशलिस्ट।"

प्रश्न: लेकिन और लोगोंका सहयोग ये लोग क्यों नहीं लेते?

विनोबा: आपको अिस संबंधमें गांधीजीसे सबक लेना चाहिये। रचनात्मक काम करनेवाले जब जेल जाना चाहते थे, तो अुन्हें अपने रचनात्मक कामसे अिस्तीफा देना पड़ता था। आज भी अुन्हें जब राजनीतिमें अुतरनेकी आवश्यकता महसूस होती है, तो रचनात्मक कार्यसे अलग होना पड़ता है। हेतु यही है कि न सिर्फ हमें, बल्कि सामनेवालेको भी हमारे अिरादोंके बारेमें कोअी शंका नहीं रहनी चाहिये। अुसे यकीन होना चाहिये कि अिनका काम शुद्ध है, साफ है, अुसमें मिश्रण नहीं है। आज बहुतसे लोग अपने सार्वजनिक कामको अेक्सप्लॉअिट (बहाना) करना चाहते हैं। अैसा नहीं होना चाहिये। गांधीजीने अैसा कभी नहीं किया। अुन्होंने अपने वचनकी प्रतिष्ठा हासिल की। अैसी सिद्धि हमें हासिल करनी चाहिये। आज तो सत्ताके लिअे सेवा चल रही है। गांधीजीने तो केवल सेवाके लिअे ही अनेक संस्थाअें चलाअीं, और अनेक गैर-कांग्रेसियोंको भी अुनमें शरीक कर लिया।

सोशलिस्ट मित्रोंने फिर अपना बुनियादी सवाल पूछा:

"शोषण रोकनेके लिअे सर्वोदय समाज क्या करता है?"

"सर्वोदय समाजके अुद्देश्य और नियम आपने पढ़े हैं?" विनोबाने अुनसे ही पूछा।

"नहीं।"

"तो पहिले आपको वे पढ़ लेने चाहियें। हमारा अेक समग्र परिपूर्ण कार्यक्रम है। और फिर आजकल तो गत चार रोजसे सर्वोदय संमेलनकी कार्रवाअी यहीं चल रही है। अुसमें कितनी ही बातोंका खुलासा रोज होता रहता है। आप लोगोंसे मेरी शिकायत ही यह है कि आप हमारा साहित्य नहीं पढ़ते। बिना हमारा साहित्य पढ़े आपके सवाल पूछनेका क्या महत्त्व है?" अेक क्षण रुककर फिर सोशलिस्टोंके संबंधमें अपना अनुभव बताते हुअे विनोबाने कहा: "मैं देख रहा हूं कि आपके यहां भी नौजवान आजाद नहीं हैं। ज्ञानसंपादनके लिअे स्वतंत्रता चाहिये। परंतु जहां पार्टीके साथ नाता बंध जाता है, दिमागी गुलामी शुरू हो जाती है। पार्टीवाले तरुणोंके दिमागोंको अपने ही विचारोंसे भर देते हैं। अेक ही ढांचेमें सबको ढालना चाहते हैं।"

बातचीत बहुत ही आत्मीयता और अनौपचारिक ढंगसे चल रही थी। अुन मित्रोंको लग रहा था कि हम किसी अपने ही आदमीके साथ वार्तालाप कर रहे हैं। सभी नौजवान थे, और सहृदय तो थे ही। नौजवानोंने हमेशा ही विनोबा पर अपना हक जताया है और विनोबाने भी अुनके साथ अधिकसे अधिक अेकरूपताका अनुभव किया है।

अुन मित्रोंने पुनः निःसंकोच होकर कहा:

"हमें तो डर है कि सर्वोदय समाजमें भी कांग्रेसका ही बहुमत है।"

"अिससे क्या होता है? सर्वोदय समाजमें निर्णय कोअी मेजॉरिटीसे तो होते नहीं?" — विनोबाने समझाया। सर्वोदय समाजकी कार्यप्रणाली आदिके बारेमें भी बातें हुअीं। अिस संबंधमें सत्य और अहिंसाका जिक्र आना स्वाभाविक था। तब विनोबाने कहा:

"बुनियादी चीज यह है कि क्या आप लोग सत्य और अहिंसाको बेसिक (बुनियादी) सिद्धांतके तौर पर मानते हैं? लेकिन आप लोग बुनियादी अुसूलोंके रूपमें सत्य और अहिंसाको स्वीकारनेके लिअे तैयार नहीं हैं। अगर सत्य और अहिंसाको मान लें, तो हमारे यहां तो हिन्दू सभावाले भी आ सकते हैं। पर वे नहीं आते, क्योंकि वे अहिंसामें नहीं मानते।"

"मतभेद अहिंसाके बारेमें ही है। सत्यके बारेमें कोअी मतभेद नहीं है।"

www.vinoba.in

"यह सही नहीं है। मान लीजिये कि मैं लड़ाईके लिअे सेना तैयार करता हूं। तब मैं अपनी सारी योजनायें तो दुश्मनको नहीं बताता। बल्कि हमला करनेका अिरादा रखते हुअे भी बताया यह जायगा कि हम हमला करना नहीं चाहते। नहीं करेंगे। तब सत्य कहां रहा? और फिर यह कहना कि मतभेद सत्यके बारेमें नहीं, केवल अहिंसाके बारेमें है, कहां तक ठीक है? असल बात यह है कि भक्त जिस प्रकार परमेश्वरको ही अपना आखिरी सहारा मानता है, अुसी तरह आप लोग अपना आखिरी सहारा हिंसाको मानते हैं, अहिंसाको नहीं।"

अिससे अिनकार करनेका सवाल ही नहीं था। अपने पॉलिसी-स्टेटमेंट (नीति-निवेदन) के बारेमें* श्री जयप्रकाशजीने मद्रासमें कहा ही था:

"The policy statement has catagorically stated that *under present conditions* in India Democratic methods are the only methods to follow. It states that if *conditions change our methods will also change!*"

"नीति-निवेदनमें साफ कहा गया है कि हिन्दुस्तानकी **मौजूदा परिस्थितिमें** सिर्फ जनतंत्रशाही तरीकों पर ही चल सकते हैं। अुसमें कहा ही है कि यदि **परिस्थिति बदल जाय तो हमारे तरीके भी बदल जायेंगे।**" (मोटे अक्षर हमारी ओरसे)

जाहिर है कि समाजवादियोंके लिअे डेमॉक्रेटिक मेथड्स (जनतंत्रशाही तरीके) परिस्थितिसापेक्ष हैं और सत्य-अहिंसामें निरपेक्ष निष्ठा रखनेवालेके लिअे परिस्थिति सापेक्षताका सवाल ही नहीं खड़ा होता। संभव है विनोबाजीका अिशारा जयप्रकाशजीके अुपरोक्त कथनकी ओर ही हो। लेकिन चर्चाने युवक मित्रोंको सोचनेके लिअे काफी मसाला दे दिया था और संभव हुआ तो यात्रामें फिर कभी मिलनेकी बात भी अुन्होंने की। अंतमें चुनावमें शुद्धता रखनेके संबंधमें मार्गदर्शनकी दृष्टिसे अेक और प्रश्न अुन्होंने पूछा, जिसके अुत्तरमें विनोबाने कहा:

"चुनावके संबंधमें लोगोंको आवश्यक ट्रेनिंग मिलनी चाहिये। हर पार्टीको चाहिये कि चुनावके पावित्र्यकी चिन्ता समान रूपसे रखे। 'हार जायें तो परवाह नहीं, पर पावित्र्य कायम रखेंगे।'—अिस भावनासे चुनावमें हिस्सा लेना चाहिये। अिंग्लैण्डकी जनता चुनावके संबंधमें कितनी सुशिक्षित है, यह अिस अेक बातसे पता चलता है कि अितनी बड़ी लड़ाअीमें जीत मिला देनेवाले अपने युद्ध-नेता चर्चिलको भी अुसने युद्धोत्तर कालकी जिम्मेदारियोंके लिअे चुनना ठीक नहीं समझा—नहीं चुना। अिसमें शक नहीं कि जहां तक लड़ाअीका संबंध है, चर्चिलको वे लोग नहीं भूल सकेंगे। परंतु अुन्होंने जब देखा कि अब चर्चिलसे काम नहीं चलेगा, तो अेटलीको चुन लिया।"

दा० मूं०

कोढ़-कामकी तालीम

महारोगी सेवा मंडल, दत्तपुर (पो० नालवाड़ी, वर्धा) के मंत्री ता० १८-८-'५१ के 'हरिजन' में छपी अपनी "कोढ़-कामकी तालीम" नामक विज्ञप्तिके साथ जोड़नेके लिअे नीचेकी चीज भेजते हैं:

तालीम २ अक्तूबर, १९५१ गांधी जयन्तीके दिनसे शुरू होगी। अुम्मीदवारोंकी अर्जियां १५-९-'५१ से पहले मंत्रीके पास पहुंच जानी चाहियें। अिन्टर आर्ट्स पास किये हुअे अुम्मीदवारोंकी अर्जियों पर भी विचार किया जायगा। (पहली विज्ञप्तिमें अिन्टर सायन्सका ही जिक्र हुआ था।)

(अंग्रेजीसे)

* मद्रास अधिवेशन रिपोर्ट, पृ० ४

'अधिक अन्न नष्ट करो' आन्दोलन!

आहार-विज्ञानका कोअी भी अीमानदार जानकार यह स्वीकार करेगा कि बिस्किट और मिठाअियोंकी फैक्टरीमें जाकर अनाज जब वहांसे निकलता है, तो अुसके पोषक तत्त्व नष्ट हो चुके होते हैं और अुसका मूल्य बढ़ जाता है। तब वह जनताके अुपयोगका स्वास्थ्यप्रद और पोषक आहार नहीं रह जाता, बल्कि अूपरी या मध्यम वर्गके लोगोंकी रुचिको लुभावना लगनेवाला हानिकर शौकका खाद्य बन जाता है। यह बात अितनी साफ है कि कोअी भी व्यक्ति, जो अिस प्रश्न पर विचार करेगा, अिससे अिनकार नहीं कर सकता। अब जरा अिस विज्ञापनका मुलाहिजा कीजिये:

> "पूर्वकी सबसे बड़ी और सबसे ज्यादा आधुनिक बिस्किट-फैक्टरी चालू हो गयी! भारतकी औद्योगिक प्रगतिमें अेक बड़ा कदम! पूर्वकी दुनियामें कोअी दूसरी फैक्टरी अुत्पादनकी क्षमतामें अिसका मुकाबला नहीं कर सकती! प्रति दिन ३० टन बिस्किट और ६० टन मिठाअियां! अेक भव्य प्रयास!" (हिन्दुस्तान टाअिम्स, १८ जुलाअी, १९५१)

प्रतिदिन ३० टन बिस्किट और ६० टन मिठाअियां! अिसमें अनाज और शक्करका खर्च कितना होगा, यह सोचिये। और याद रखिये कि अितना खर्च तो केवल अिस अेक फैक्टरीमें होगा, जब कि अैसी कितनी ही दूसरी फैक्टरियां भी हैं।

समर्थ पाठक अगर मुझे यह बता सकें कि भारतमें बिस्किट, मिठाअियां, या नाश्तेकी तरह काममें आनेवाली अन्नकी दूसरी चीजें तैयार करनेवाली अिन सारी फैक्टरियोंमें अनाज और शक्करका कुल खर्च कितना होता है, तो मैं अुनका बड़ा अहसान मानूंगी।

यह साफ समझ लेना चाहिये कि ये चीजें अैसी नहीं हैं, जिन्हें लोग भूख बुझानेके लिअे भोजनके समय खाते हों। अुनका अुपयोग तो भोजनोंके बीचमें हलके नाश्तेकी तरह और जीभके स्वादके लिअे होता है। अिस तरह भूखोंका, अुनकी भूख शांत करनेवाला मूल्यवान अन्न स्वादलोलुपोंके सुखके लिअे कृत्रिम मिठाअियों पर खर्च होता है।

मैं किसी खास कारखाना खोलनेवालेको दोष नहीं देती। अिन मित्रोंको बचपनसे यही सिखाया गया है कि 'धनान्यर्जयध्वम्', धनान्यर्जयध्वम्—धन कमाओ, धन कमाओ! अिसके सिवा अुन्हें अैसे लोगोंका सम्पर्क भी नहीं मिलता, जो अुन्हें बतायें कि वे राष्ट्रके स्वास्थ्यके साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। अिसलिअे अगर वे यह सोचते हैं कि मिठाअियां बनानेके कारखाने खड़े करना अपनी तिजोरियां भरने और साथ ही देशकी सेवा करनेका अुत्तम अुपाय है, तो स्वाभाविक है। लेकिन मैं अुस सरकारको जरूर दोष देती हूं, जो अैसे अुद्योगोंको प्रोत्साहन देती है और अैसे अुद्घाटन-समारोहोंकी शोभा-वृद्धिके लिअे अपने मंत्रियोंको भी भेजती है। आजकल सरकार दो शब्दप्रयोगोंका बहुत ज्यादा आश्रय लेती है: 'गांधीवादी आदर्श', और 'युद्धकालीन तौर पर'। अैसी कृत्रिम मिठाअियां बनानेमें होनेवाले अनाज और शक्करके अिस बेहिसाब खर्चमें तो अिन दो में से किसी अेककी भी दुहाअी नहीं दी जा सकती।

सरकारके 'अधिक अन्न अुपजाओ' आन्दोलनमें कहीं भी 'गांधी विचारधारा' का स्पर्श नहीं है। अिसे सिद्ध करनेके लिअे किसी दलीलकी जरूरत नहीं, वह तो प्रत्यक्ष बात है। मुझे लगता है कि यह भी अुतना ही प्रत्यक्ष है कि अुसमें 'युद्धकालीन तौर पर' काम करनेकी बात भी नहीं है। प्रमाणकी जरूरत हो ही, तो अूपरका अुदाहरण करीबन अन्धेको भी दिख जाय अैसा है।

पिलखी, २४-७-'५१ मीरा

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१ सितम्बर १९५१

हैदराबादका जमीनका सवाल

आंध्र-विनोबा पत्रव्यवहार ('हरिजनसेवक', १८ अगस्त, '५१) में पाठकोंने देखा होगा कि जमीनके बंटवारेकी बेहद विषमता हमारे देशकी अेक कठिन समस्या है। पत्रव्यवहार सिर्फ तेलंगानाकी ही परिस्थितियों तक सीमित है, लेकिन यह समस्या किसी अेक स्थानकी नहीं है। वह अेक भारत-व्यापी समस्या तो है ही, शायद दुनियाकी भी है। अिस विशाल भूमाता पर कुछ अिने-गिने व्यक्तियों, या छोटी-छोटी जनसंख्यावाले कुछ देशोंका ही अधिकार रहे, और करोड़ों आदमियोंके पास अेक अिंच जमीन भी न हो, यह अेक अैसी परिस्थिति है जिस पर गरीबोंका हरअेक हित-चिन्तक दुःखी हुअे बिना नहीं रह सकता। हम मानते हैं कि अिस घोर अन्यायको दूर करनेके लिअे हिंसक अुपायोंका अमल अनुचित है, व्यर्थ है और अन्तमें गरीबोंका अहित करनेवाला है। लेकिन यह तो हरअेकको मानना ही पड़ेगा कि अन्याय वास्तविक है और अुसका निवारण होना चाहिये।

अिस दिशामें दो कदम अुठाये गये हैं: जमींदारी प्रथाका अन्त और अेक आदमीके पास अधिकसे अधिक जमीन कितनी हो, अिसकी मर्यादा। लेकिन अिस सिलसिलेमें, संविधानमें स्वीकृत भरपाअी (compensation) के अुसूलसे जमीनकी व्यवस्थाके सुधारमें बड़ी रुकावट हो गअी है। वस्तुतः जमीनकी मालिकी तथा दूसरी पूंजियोंकी मालिकीमें कोअी फर्क नहीं होना चाहिये। अगर दूसरी पूंजी और आय पर मृत्यु-कर या बढ़ता हुआ आय-कर लगाकर अुसे कम किया जा सकता है, तो कोअी कारण नहीं है कि जमीनकी मालिकीके बारेमें भी अैसा ही क्यों नहीं किया जा सकता। अिस विषयकी आलोचना करते हुअे समाजवादियोंने कहा है कि "अिसके कारण जमींदारीके अन्तका व्यवहारमें लगभग कोअी अर्थ ही नहीं रह गया है। अर्थकी दृष्टिसे देखें तो भरपाअीका काम हमारे लिअे विघातक है। न्यायके अनुसार भी जमींदारोंको अिन बड़ी-बड़ी अनुपार्जित आयोंका, जिन पर अुनका स्वामित्व बहुत संदिग्ध है, कोअी अधिकार नहीं है।" यह आलोचना बहुत अुचित मालूम होती है। और अिसलिअे अुनका यह प्रस्ताव भी सही मालूम होता है कि "भरपाअीकी कोअी जरूरत नहीं है, सिर्फ छोटे-छोटे जमींदारोंको अुनकी जीविकाकी नअी व्यवस्थाके हेतु कुछ सहायता देकर जमींदारी खत्म कर देनी चाहिये।" (समाजवादी पार्टीका घोषणापत्र) अुसे यह कहकर नहीं टाला जा सकता कि वह अेक हिंसक अुपाय है।

लेकिन जमींदारीकी समाप्ति और फी व्यक्ति अधिकसे अधिक जमीनकी मर्यादा बांधनेसे भी पूरा सवाल नहीं सुलझता। अिससे सिर्फ अुन्हीं किसानोंको कुछ राहत मिलती है, जो अभी-अभी तक जमीन पूरी मालिकीसे कुछ कम हैसियतमें जोतते रहे हैं। अिन सुधारोंसे अुन लाखों लोगोंको कोअी राहत नहीं मिलती, जो बेजमीन खेतिहरोंकी असहाय अवस्थासे अुठकर निजी जमीन रखने-वाले किसान बनना चाहते हैं। अुन लोगोंको तो जमीन तभी मिल सकती है, जब कि सरकार अुन्हें नयी जमीन दे, या जिनके पास ज्यादा जमीन है, अुनसे जमीनका कुछ हिस्सा अिन लोगोंमें बांटनेके लिअे हासिल करे। दूसरे अुपायका अमल करनेमें भरपाअीकी बातसे अितनी बड़ी रुकावट पैदा होती है कि अुसे हल करना बहुत कठिन है। अिसीलिअे साम्यवादियोंका हिंसक क्रांति करने और बलपूर्वक जमीन छीन लेनेका सिद्धान्त और कार्यक्रम पैदा हुआ है। विनोबाने अपनी यात्रामें अेक तीसरा मार्ग बताया। अुन्होंने मनुष्यकी नीति और धर्मकी भावनाओंका आह्वान किया, और अुनसे जमीन-दान करनेके लिअे कहा। विनोबाका यह निवेदन बहुत दूर तक सफल हुआ, और अुससे यह सिद्ध हुआ कि अिस जड़वादके युगमें भी मनुष्यकी मनुष्यता बिलकुल नष्ट नहीं हो गअी है। वह अुदार बन सकता है। 'भरपाअी' करना या 'बलपूर्वक छीनना' सिर्फ यही दो अुपाय रह गये हैं, अैसी बात नहीं है। अिस प्रसंगमें अिस विषय पर अेक हैदराबादी मित्रके नाम लिखी हुअी विनोबाकी चिट्ठीके कुछ अंश यहां अुद्धृत किये जा रहे हैं। पाठक अुन्हें ध्यानसे पढ़ें:

"मेरा निरीक्षण मैंने कअी दृष्टियोंसे किया है। सरकार, पुलिस, जमींदार, रैयत, आम जनता, कम्युनिस्ट और कांग्रेसवाले सबकी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओंको बारीकीसे देखनेका मौका मुझे मिला। सबके सेवक और सबके अविरोधी हित चाहने-वालेकी हैसियतसे मैंने सबके सम्बन्धमें आनेकी कोशिश की।

"मैं अिस कम्युनिस्ट सवालको न सिर्फ हैदराबाद स्टेट या भारतका, बल्कि दुनियाका सवाल समझता हूं। केवल हैदराबादका अगर यह सवाल होता, तो वह अेक स्थूल और व्यावहारिक सवाल हो जाता। लेकिन अेक जागतिक सवाल होनेके कारण मेरी निगाहमें वह वैचारिक सवाल था। और मेरे निरीक्षणसे मुझे अुसका वैसा ही दर्शन हुआ।

"अिसके हलके लिअे हमें क्या-क्या कदम अुठाने चाहियें, अुनकी तो अेक फेहरिस्त होगी। लेकिन अुन सबमें जो चीज मुझे सबसे अलग और मूलभूत लगी, वही मैं अिस पत्रमें लिख देता हूं।

"तेलंगानामें जमीनका मसला गरीबोंके जिन्दा रहनेका मसला है। हरअेक गांवकी जानकारीके आंकड़े मैं लेता था। मुश्किलसे प्रति व्यक्ति अेक अेकड़ जमीन है। अुसका अस्सी प्रतिशत चंद लोगोंके हाथमें है और बाकी सारे भूमिहीन हैं। नाम लेने लायक कोअी ग्रामोद्योग भी नहीं, जो कि अधिकांश लोगोंको कुछ पूरक मजदूरी दे सके। और लोग-बाग सारे सिंदी-ताड़ीके नशेमें दुःखको भुलानेका दैनिक कार्यक्रम चला रहे हैं। तिस पर भी अुनका दुःख नहीं मिटता है और गैरजिम्मेदार लोग अिसीका फायदा अुठा रहे हैं। तब मानवताकी नैतिक भावना जाग्रत करनेके लिअे भूमिदान-यज्ञकी कल्पना मुझे सूझी। लोगोंका सद्भाव जाग्रत हुआ। अुसका जो परिणाम आया और अुसको आगे बढ़ानेके लिअे जो योजना की गअी, अुसकी जनताको जानकारी देनेवाला अेक पत्रक मैंने प्रकाशित कराया है, जिसकी नकल अिस पत्रके साथ जोड़ देता हूं।

"अिस तरहका भूमिदान-यज्ञ आरम्भ करनेमें मेरी अेक अपेक्षा यह भी थी कि अिससे कानून बनानेमें सहूलियत होगी। और कानून भी अकसर जिस तरह कंजूस बनता है वैसा न बने, बल्कि अुदार और अच्छा बन सके। मैं जानता हूं कि महफूज कौलदारका अेक कानून हैदराबाद सरकारने बनाया है और अपनी हद तक वह अच्छा भी है। लेकिन अुसके साथ अेक अैसा भी कानून बनाना चाहिये, जिससे किसी भी व्यक्तिके नाम पर अधिकसे अधिक कितनी जमीन मान्य की जाय, अिसकी भी हद बंध सके। अिसकी बहसमें व्यर्थ समय जाया नहीं करना चाहिये। अगर हम मसलेको हल करना चाहते हैं, तो अिसकी अहमियत फौरन महसूस होनी चाहिये।

www.vinoba.in

"मेरा तो विचार है कि हवा और पानीके मुताबिक हरअेक भूमिपुत्रका यानी हरअेक मनुष्यका भूमिमाता पर अधिकार होना चाहिये। लेकिन मौजूदा विषम परिस्थितिको सोचते हुअे मैंने अिस बातके लिअे अपने मनको तैयार कर लिया है कि सौ अेकड़ खुश्की या बीस अेकड़ तरी की आखिरी हद वारंगल जैसे जिलेके लिअे चल सकती है। अिस आंकड़े पर मैं अड़ा नहीं रहूंगा, बल्कि सज्जनों और महाजनोंके विचारसे अिसमें कुछ कमी-बेशी की जा सकेगी।

"लेकिन जैसा कि मैं सुन रहा हूं, २५० अेकड़ खुश्की या ५० अेकड़ तरी की बात सोची जा रही है। मुझे कबूल करना चाहिये कि यह बात मुझे हास्यास्पद लगती है। २५० अेकड़ खुश्की या ५० अेकड़ तरी की सीमा बांधी जाय, तो भी वह मुझे ज्यादा मालूम होती है। मैं चाहता हूं कि आप लोग अिस बारेमें अच्छे सर्वमान्य निर्णय पर पहुंच जायं।

"कानून होने पर भी भूमिदान-यज्ञ तो चालू ही रहना चाहिये। गरीबोंके पास बगैर किसी रुकावटके सीधे भूमि पहुंचानेका अुससे बढ़कर क्रांतिकारक और शांतिमय अिलाज कोअी हो ही नहीं सकता। अुसके लिअे मैं अेक सर्वसामान्य अपील निकाल रहा हूं, जो तैयार होने पर आपके पास भी भिजवाअूंगा। अैसी जो भी जमीनें अभी तक दानमें दी गअी हैं और आगे दी जायंगी, अुनकी ठीक काश्त होनेके लिअे तकाबी वगैरा जो भी देना पड़े, देना जरूरी होगा।"

अिस अुपायका प्रयोग जारी रखनेकी और आगे बढ़ानेकी जरूरत है, ताकि अेक अनुकूल वातावरण तैयार हो जाय और सरकार अैसा कानून बना सके, जिससे कि भूमिका हर मालिक, मरपाअीकी मांग किये बिना अपनी जमीनका अेक हिस्सा बेजमीन लोगोंको बांटनेके लिअे सौंप दे। जनमतकी तैयारीके पश्चात् बननेवाले सुधार-कानूनका यह अेक सुन्दर अदाहरण होगा।

(अंग्रेजीसे) कि० घ० मशरूवाला

सर्वोदयी फूलिया

पिछले महीने मैं राजस्थानमें नस्ल सुधारके लिअे हरियानेसे सांड़के लायक कुछ बछड़े खरीदने गया था। यहांसे तो हम चार आदमी निकले थे, लेकिन १-२ दिनके बाद मैंने तीन साथियोंको वापिस कर दिया। क्योंकि अितने लोगोंका समय और पैसा खर्च करनेकी जरूरत नहीं समझी। अिसलिअे अकेला ही रोहतक जिलेके देहातोंमें लाला हरदेवसहायजीकी सहायतासे घूमनेके लिअे अुनके पास परिचय-पत्र लेकर गया। अेक गांवसे दूसरे गांव जाते समय वहांके अगले गांवके लोगोंके नाम, पते वगैरा पूछ लेता और अुनकी मददसे वहां बछड़े देखता था। मैंने देखा कि आज भी हरियानाके किसान जितने पशु रखते हैं, अुतने बहुत अच्छी तरह रखते हैं। लेकिन धीरे-धीरे अुनका झुकाव भी भैंसकी तरफ बढ़ता जा रहा है; बाछियों और अच्छे सांड़ पालनेकी तरफ अुनका अुतना ध्यान नहीं है, जितना होना चाहिये। अिसलिअे हरियाना नस्ल भी धीरे-धीरे नष्ट हो रही है। आज भी वहां अच्छी गाय और सांड़के लिअे अुत्तम बछड़ा मिलना कठिन है। अगर यही सिलसिला चलता रहा और सरकार तथा गोसेवकोंने अिस तरफ जल्दी ध्यान नहीं दिया, तो हिन्दुस्तानकी अेक सर्वांगी अुत्तम नस्लका लोप हो जायगा।

मैं जिस गांवमें जाता, अुस गांवकी स्थितिका थोड़ासा परिचय भी कर लेता। अुस गांवमें हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्ध कैसे हैं, हरिजनोंके साथ क्या सम्बन्ध हैं, खादी पहननेवाले कितने हैं, वहांकी आर्थिक स्थिति कैसी है, सार्वजनिक कार्योंमें लोग कितना सहयोग देते हैं, वगैरा मोटी-मोटी बातें जान लेता। वहां अब देहातोंमें मुसलमान तो करीब-करीब रहे ही नहीं।

मैं अेक गांवसे दूसरे गांव जा रहा था। रास्तेमें पासके गांवका ही अेक भाअी मिल गया, जो अुसी गांव जा रहा था। जब अुस गांवमें प्रवेश किया, तो गांवका गांव अुजड़ा हुआ देखा। सिर्फ २-४ घर हिन्दुओंके थे। मैंने अुस भाअीसे पूछा: "यह गांव कैसे अुजड़ गया?" अुसने कहा: "यहां लगभग ३०० घर मुसलमानोंके थे। वे सब हिन्दू-मुस्लिम झगड़ेमें भाग गये। सब बड़े अच्छे लोग थे और हमारा आपसमें बड़ा अच्छा सम्बन्ध था। वे बड़े अुदार और सेवाभावी थे। रात बिरातमें कोअी भी मुसाफिर आ जाता, चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, तो अुसकी बड़ी सेवा करते थे। हिन्दू अतिथियोंके लिअे तो अुन्होंने खास व्यवस्था रखी थी। मैं जब अिस गांवमें आता था, तो जिस गलीसे निकलता, अुस गलीसे चारों तरफसे आवाज आती: 'पण्डितजी सलाम! पण्डितजी सलाम! आअिये, बैठिये।' और मेरा हृदय प्रेमसे भर आता। आज मुझे अिन गलियोंको देखकर भारी वेदना होती है।" सचमुच ही अुस अुजड़े हुअे गांवका दृश्य देखकर पत्थर-हृदय भी रोये बिना नहीं रह सकता। अैसी दुर्दैवी घटनायें न मालूम हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें कितनी घटी होंगी? और कितने ही बेगुनाह लोग बेघरबार और हमेशाके लिअे अेक दूसरेसे अलग हो गये। अैसे भयानक मौके पर भी जो लोग अपने धैर्यको कायम रख सके वे धन्य हैं। कितने ही तूफान आये, लेकिन हिन्दू-मुसलमानोंमें अनेक अैसे भाअी बेलाग पड़े हैं, जो अैसी बुरी परिस्थितियोंमें भी अेक-दूसरेकी वफादारी रख सके हैं। और अुनको भले कोअी भी न जाने, लेकिन अुनकी निष्ठा भारी सेवा कर रही है। अैसा ही अेक आत्मनिष्ठ सेवक मुझे अिस प्रवासमें मिला, जिसके परिचयसे मुझे भारी आनंद हुआ। 'हरिजनसेवक' के पाठकोंको अुस आनंदमें शरीक करने तथा अुस भाअीका परिचय करानेके लोभसे यह प्रसंग लिखे बिना नहीं रहा जाता है।

हरियानेमें जहां प्रसिद्ध बैलोंका मेला लगता है, अुस जहाज़-गढ़के पासमें ही अेक मारोथ गांव है। पहिले गांवसे अेक भाअीका नाम पूछकर मैं मारोथ पहुंचा। अैसी बात नहीं है कि मैं कांग्रेसवालों या खादीवालोंके पास ही जाया करता था, लेकिन अकसर यही होता था। जिस भाअीके पास गया, वे कांग्रेसके कार्यकर्ता थे। पहिले तो मैंने अुनसे बछड़े वगैराकी बात की और गांवमें घूमकर बछड़े देखे। फिर मैंने अुनसे पूछा: "अिस गांवमें कितने खादीधारी हैं?" अुन्होंने कहा: "तीन।" और भी गांवकी स्थिति पर चर्चा होती रही। जब मैं भोजन करनेके लिअे अुनके घर जा रहा था, तो रास्तेमें अेक मकान पर चुनाअीका काम चल रहा था। अुस पर जो राज काम कर रहा था, अुससे साथवाले भाअीने मेरा परिचय कराया। मुझसे कहा: "हमारे तीन खादीधारियोंमें से अेक यह है।" अिस बातमें मैंने कोअी विशेष दिलचस्पी नहीं ली। जान लिया और अुनके घर भोजन करने चला गया। जब मैं भोजन करके लौटा और अुस भाअीकी भी चुनाअीके कामसे छुट्टी हुअी, तो वह मेरे पास आया। तीसरा भाअी भी आ गया था। तीनोंके साथ थोड़ी चर्चा हुअी। जिन भाअीके यहां मैं ठहरा था, अुन्होंने मुझे अुस भाअीके, जो मकान चुन रहा था, जीवनके बारेमें विस्तृत जानकारी कराअी। अुन्होंने कहा: "अिसका नाम फूलिया है। जातिका कुम्हार है। लेकिन दूसरे भी कअी काम जानता है। खादीका बड़ा निष्ठावान भक्त है। अिसके घरमें सब खादी पहनते हैं। अखबार भी मंगाता है।" अब तककी चर्चामें भी फूलियाकी ओर मेरा कोअी विशेष आकर्षण नहीं हुआ था। मैंने पूछा: "कौनसा अखबार मंगाता है?" मैंने समझा था कि कोअी साधारण समाचारपत्र मंगाता होगा। फूलियाने कहा: "'हरिजनसेवक' मंगाता हूं।" मैं अेकदम चौंका। क्योंकि वहां पर कोअी 'हरिजनसेवक' पढ़नेवाला आदमी होगा,

www.vinoba.in

अैसी मेरे मनमें कल्पना भी नहीं थी। फूलिया बोलने लगा: "आजकल तो विनोबाजीकी हैदराबादकी पैदल-यात्राका बड़ा सुन्दर वर्णन आता है।" तब मेरी अिच्छा सहज ही फूलियाके जीवनमें गहरा अुतरनेकी हुअी। मैंने पूछा: "तुम नियमसे 'हरिजनसेवक' पढ़ते हो?" अुसने कहा: "मैं खुद तो नहीं पढ़ सकता हूं, लेकिन अपने लड़केसे पढ़ाकर सुनता हूं। क्योंकि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं।" यह सुनकर मुझे आनंद और आश्चर्य हुआ और लगा कि यह कोअी विशेष आदमी होना चाहिये, जो खुद न पढ़ सकने पर भी सुननेके लिअे 'हरिजनसेवक' मंगाता है। अुसने आगे कहा: "वैसे मैंने पढ़नेकी कोशिश तो की, थोड़ासा पढ़ भी लेता हूं, लेकिन पढ़ते समय मेरी आंखोंसे पानी निकलने लगता है। अिसलिअे पढ़ाअीका काम बहुत आगे नहीं बढ़ सका। हां, मजदूरीके काममें मैं कभी थकता नहीं हूं। वैसे तो मैं कुम्हार हूं। लेकिन राज (चुनाअी)का काम भी कर लेता हूं। बुनाअी कर लेता हूं, कताअी-धुनाअी सब जानता हूं और खेतीका काम भी करता हूं। पहले संवत् ९५ व ९७ में जब बड़े दुकाल पड़े थे, तब मैंने दो-तीन आदमियोंको साझी करके अेक छोटासा चरस बनाकर बैलकी जगह आदमियोंसे पानी खींचकर और जमीन खोदकर खेती की थी। अिसमें अेक बार ५० और अेक बार ५५ मन जौ हुअे थे। अुससे हमारा दुष्काल कट गया था। जब दूसरा काम नहीं होता है, तब मैं बैठकर बुनाअी करता हूं। बच्चों और पत्नीको कातना और धुनना सिखा दिया है। मैंने निश्चय किया है कि मेरे घरमें मिलका अेक धागा भी नहीं घुस सकता। दूधके लिअे मैं गाय रखता हूं। मरते समय अपने बच्चोंको भी यह कहकर जाअूंगा कि घरमें मिलका कपड़ा और भैंसका प्रवेश न हो। बरतन भी मैं मनुष्यके जीवनोपयोगी ही बनाता हूं। मिट्टीके हुक्के, चिलमें, दावतमें काम आनेवाले सिकोरे मैं नहीं बनाता। क्योंकि अिन बरतनोंको मैं हानिकर और अनावश्यक मानता हूं। अिससे गांवके लोग मुझसे नाराज भी हैं। मेरी जो कुम्हारी वृत्ति थी, वह अिसीलिअे टूट गअी। पानी पीनेके मटके, दूध निकालने, जमाने, चलानेके बरतन, सागकी हांडी, अनाज रखनेके बरतन, जानवरोंको दाना देने और पानी पिलानेकी नांदें — अैसे मनुष्य और पशुजीवनके अुपयोगी बरतन ही बनाता हूं।"

"मैंने दो दफे दिल्ली जाकर महात्माजीका भाषण सुना था। अुसमें अुन्होंने बताया था कि गायकी रक्षासे ही भैंसकी रक्षा हो सकती है। दूसरी बात अुन्होंने कही थी कि अपने बीचमें रहे थोड़े मुसलमानोंको मार निकालनेमें बहादुरी नहीं, कायरता है। मुझे अुनकी दोनों बातें पसन्द आअीं। जब यहां पंजाबमें हिन्दू-मुस्लिम झगड़ेका पागलपन सवार हुआ, तो करीब-करीब सब लोग विवेक खो बैठे थे। अुन दिनों गांव-गांवमें हिन्दू-मुस्लिम झगड़ेका भारी तूफान चल रहा था। अुसकी आंधी अेक रोज यहां भी आअी। अुसके नेताने, जो मेरे आर्यसमाजी दीक्षागुरु थे, जो अिस अिलाकेमें अेक बड़े विद्वान्, त्यागी तथा अेक विद्यालयके आचार्य हैं, जिनके प्रति मेरी बहुत श्रद्धा अेवं भक्ति थी, कहा: 'फूलिया, चल खड़ा हो। हमारे साथ चल।' अुनके हाथमें बन्दूक देखकर मेरा दिल कांप अुठा। मैंने कहा: 'महाराज, मेरेसे मनुष्य मारनेका काम नहीं होगा। अिसको मैं धर्म नहीं अधर्म मानता हूं। गांधीजीने कहा है कि अपने बीच रहे थोड़े आदमियों पर हाथ अुठाना कायरता है। अगर आपको मुसलमानोंसे लड़ना ही है, तो पाकिस्तानमें जाकर लड़िये।' वे और दूसरे लोग मेरे अूपर क्रुद्ध हो अुठे और बोले: 'अच्छा मुसलमानोंके साथ-साथ तुझे भी हम मौतके घाट अुतारेंगे।' मैंने कहा: 'मेरे घरम सात प्राणी हैं। हम पति-पत्नी, तीन बच्चे, अेक गाय और अुसका बच्चा। आप हम सातोंको ही अेक साथ मौतके घाट अुतार देंगे तो बहुत अच्छा होगा। लेकिन मैं मनुष्य मारनेके काममें हिस्सा हरगिज नहीं लूंगा।' वे तो बौखलाये और 'अच्छा तुझे बादमें देखेंगे', कह कर चले गये। अुसी झगड़ेमें गुरुकुलका अेक विद्यार्थी मुसलमानकी गोलीसे मारा गया। अुसका दाहसंस्कार करनेके लिअे प्रत्येक घरसे पावभर घी और अेक रुपया अुगानेकी बात आअी। मुझसे भी मांगा गया। मैंने साफ अिनकार कर दिया। क्योंकि वह तो दूसरोंको मारनेके लिअे गया था। पर दूसरेने अुसको मार दिया। अैसे काममें मैं हिस्सा नहीं ले सकता। अिसके लिअे भी लोगोंने मेरे अूपर खूब भाले दिखाये। लेकिन मैंने तो निश्चय कर लिया था कि चाहे प्राण चले जायें, लेकिन अिस काममें हिस्सा नहीं लूंगा।"

"धरी न काहू धीर सबके मन मत्सर हरे। जे रासे रघुबीर ते अुबरे तेहि काल महुं।" सचमुच ही अुस आपसके मत्सरमें अच्छे-अच्छे लोग फंस गये। अुस बुरे समयमें जिनको भगवानने बचाया, वे ही बच सके। नहीं तो कहां गधा चरानेवाला फूलिया और कहां वेदोंका ज्ञाता और अुच्च कोटिका त्यागी हिंसाके लिअे अुभाड़नेवाला फूलियाका गुरु? दैवयोगसे अुनसे मेरी मुलाकात फूलियासे मिलनेसे पहिले ही हो चुकी थी और अुनके अुस रूपकी थोड़ीसी झांकी मुझे भी मिल चुकी थी। अिसलिअे फूलियाकी बात पर अपने आप मोहर लग गअी। अच्छे गुणोंका ठेका विद्वत्ताका तो नहीं है, लेकिन बड़े-बड़े त्यागी भी अूपरसे साधारण दीखनेवाले आदमीके मुकाबलेमें फिसड्डी ही साबित होते हैं। फूलिया और फूलियाके आचार्य गुरुका यह ज्वलंत अुदाहरण है।

फूलियाने आगे कहा: "मैं ६ बरसका था। अेक मेरी बड़ी बहिन थी। तब संवत् ७५ की बीमारीमें मेरे माता-पिता मर गये थे। अुस समय मैं गधे चरानेका काम करता था और अपने काकाके पास रहता था। काकाने मेरे साथ बहुत अच्छा सलूक नहीं किया। अिसलिअे मैं दूसरी मजदूरी करने लगा। मजदूरी करके पहिले तो मैंने बहिनकी शादी की, फिर अपनी की। फिर धीरे-धीरे घर बनाया। मेरी बड़ी बहिनके अेक लड़का है। वह अुसकी शादी करना चाहती थी। बहिनने मुझे खबर दी कि लड़केकी शादी है और तुमको अुसमें आना पड़ेगा। मैंने कहा: 'अभी लड़केकी अुमर तेरह सालकी है। और अठारह सालसे पहले शादी करना नियम-विरुद्ध है। फिर शादीमें किसी प्रकारका जेवर या दूसरा किसी प्रकारका खर्चा नहीं होना चाहिये। बरातमें पांच आदमीसे अधिक नहीं जाने चाहियें। जब तेरा लड़का अठारह सालका हो जायगा, तो अुसकी शादी करनेकी जवाबदारी मैं लेता हूं। और मैं अपनी मान्यताके अनुसार ही करूंगा। लेकिन आज अुसकी शादीमें हिस्सा नहीं ले सकता।' मेरी बहिनका आग्रह तभी शादी करनेका था। मैं अुसके लड़केकी शादीमें हिस्सा न लूं, यह भी अुसके लिअे भारी दुःखकी बात थी। मेरे लिअे भी भारी धर्मसंकट था। लेकिन मैं तो निश्चय कर चुका था कि अपने सिद्धान्तके विरुद्ध नहीं जाअूंगा। बहिन भी अुसके शादी करनेके मोहको नहीं छोड़ सकी। अिसलिअे मैंने अुस लड़केकी शादीमें हिस्सा नहीं लिया।"

अिस चर्चासे मुझे फूलियाका घर देखनेकी अिच्छा हुअी। मैं फूलियाके घर गया। फूलियाके घरमें चार कमरे हैं। मैंने देखा, पहिले कमरेमें अुसका सब बुनाअीका सामान था। दूसरेमें मिट्टीके बरतनोंका संग्रह था। तीसरेमें गायके लिअे भूसा था और चौथेमें, जो दूसरी मंजिल पर था, कताअी-पिंजाअीका चरखा, धुनकी आदि सामान था। बीचमें मकानके सामने अेक छाया हुआ चौक-सा था, जिसमें अुसका सारा कताअी, बुनाअी व बरतन बनानेका काम चलता था। अुसीमें अुसका बरतन बनानेका चाक, मिट्टी

www.vinoba.in

कमानेका स्थान, चूल्हा, चक्की, बुनाओकी माग लगी हुओ थी जिस पर गाड़ीका पाल बुनाओके लिओ चढ़ा हुआ था। मैंने फूलियाके घरमें न तो रहनेका कोओ खास कमरा देखा, न कपड़े-लत्तोंकी कोओ पेटी देखी और न खाने-पीनेके सामानका ही संग्रह देखा। मैंने आश्चर्यसे पूछा: "भाओ, आखिर तुम्हारा खाने-पीने, सोने-ओढ़नेका सामान कहां है?" तब फूलियाने मुझे दीवारमें बनी हुओ अेक छोटीसी बुखारी दिखाओ, जिसमें करीब-करीब डेढ़ मन जौ-चने पड़े थे। और अुसके ओढ़ने-बिछानेके कपड़े तो अुसी चौकमें खाटों पर रखे थे। फूलियाने कहा: "मजदूरी करता हूं और थोड़ासा अनाज ले आता हूं, जो अिसमें रख लेता हूं। कपड़ेके लिओ हम कात लेते हैं और बुन में लेता हूं।" फूलियाकी पत्नी अेक मोटा खादीका थान कुछ सीनेके लिओ नाप रही थी। वह फूलियाके सारे घरका दृश्य देखकर अुसको कारखाना कहना, आश्रम कहना, श्रमालय कहना, या सर्वोदयी घर कहना, यह फैसला पाठक करें। मुझे तो फूलियाके सारे परिवारका जीवन सर्वोदयकी प्रत्यक्ष तसवीर दिखाओ दिया। मैंने फूलियाकी पत्नीसे बात की: "क्यों बहिन, देखो फूलिया यह क्या खटपट करता है, तुमको और बच्चोंको मोटे-मोटे कपड़े पहिनाता है। तुमको अेक भी जेवर पहिननेको नहीं देता। अरे, चूड़ी तक नहीं पहिनने देता है। तो क्या तुम्हें दूसरी बहिनोंके अच्छे-अच्छे कपड़े और गहने देखकर अिच्छा नहीं होती है? या तुम्हारी सादगी देखकर दूसरी बहनोंको भी तुम्हारे जैसे रहनेकी अिच्छा होती है?" अुस बहिनने सरल भावसे कहा: "मुझे तो किसीकी अिच्छा नहीं होती। लेकिन मुझे देखकर दूसरी औरतोंको क्या लगता होगा, यह मैं नहीं जानती।" अुस बहिनके हाथमें कांचकी चूड़ी तक नहीं थी। क्योंकि फूलिया और अुसकी पत्नीका निश्चय ही है कि जिन वस्तुओंका जीवन-रक्षणमें अुपयोग नहीं है, अुनका अिस्तेमाल नहीं करना।

फूलियाने बताया: "मेरे घरके पासके दस घरोंका पानी मेरे काम करनेके चौकमें से जाता था। यह मुझे पसन्द नहीं था। कायदेसे बरसातका पानी रोका नहीं जा सकता। दूसरी तरफ पानी जा सकता था, लेकिन करीब ४-५ फुट गहरा, १०० फुट लम्बा और २५ फुट चौड़ा अेक खड्डा था। अुस खड्डेको भरनेके लिओ वे लोग तैयार नहीं थे, जिनके घरोंके सामने वह खड्डा था। मुझे अुनसे झगड़ा नहीं करना था। अिसलिओ जब भी हमें समय मिलता, हम दोनों पति-पत्नी अपने गधोंसे अुसमें मिट्टी डालते। तीन सालसे हमारा यह कार्यक्रम चल रहा है। अब यह खड्डा करीब-करीब भर चुका है। अिस साल थोड़ीसी मिट्टी और डालनी है।" मैंने वह जगह देखी। सचमुच ही फूलियाका वह भगीरथ प्रयत्न था। अुसके तीनों बच्चोंसे भी मैंने बातें की। मैंने कहा: "क्यों रे, स्कूलमें दूसरे लड़के अच्छे-अच्छे कपड़े पहिनते हैं। तुम खादी पहिनते हो। क्या तुम्हें कभी मिलके चमकीले कपड़े पहिननेकी अिच्छा नहीं होती है?" सरल भावसे बच्चे बोल अुठे: "कभी नहीं। हमको खादी प्यारी लगती है।" फूलियाके तीनों बच्चे कातना, धुनना जानते हैं और दूसरे काममें भी अपने बापकी मदद करते हैं। तीनों स्थानीय स्कूलमें पढ़ने जाते हैं। वे बड़े ही सुशील और होशियार लड़के हैं।

बहुत दिन पहले अेक निर्मोही राजाकी कथा पढ़ी थी कि अुसका सारा परिवार ही निर्मोही था। अिसी प्रकार फूलियाका साराका सारा परिवार ही सर्वोदयी है, यह देखकर आनन्दसे मेरा हृदय भर आया और मैंने फूलियाका प्रेमसे आलिंगन किया। मेरे मुंहसे निकल पड़ा: "फूलिया, तुम धन्य हो, तुम्हारा जीवन धन्य है, तुम्हारा जीवन धन्य है।" फूलिया भी आनन्दविभोर हो गया और मुझे अेक दिन अपने घर रोककर भोजनके लिओ आग्रह करने लगा। मैंने कहा: "तुमसे मिलकर, तुम्हारा घर और परिवार देखकर मुझे बहुत आनन्द हुआ है। आगे जब कभी हरियाना आअूंगा, तो अेक दिन जरूर तुम्हारे घर ठहरूंगा और भोजन करूंगा। अभी तो मेरा अगले गांवका कार्यक्रम तय हो चुका है।" मेरा दूसरे गांव जानेका समय हो चुका था, अिसलिओ फूलियाके साथ और अधिक चर्चा करनेकी अिच्छा रहते हुओ भी मुझे वहांसे चल देना पड़ा।

फूलियाने बताया: "हमको ३ बच्चे हो गये। अब हम पति-पत्नीने मिलकर निश्चय किया है कि आअिंदा संयमसे रहेंगे और अब संतान पैदा नहीं करेंगे; और जितना हमसे हो सकेगा हम अिन बच्चोंको योग्य बनानेकी कोशिश करेंगे। मैं कभी बीमार नहीं पड़ता हूं। क्योंकि मैं किसी प्रकारका पाप न करूं तो बीमार क्यों पड़ूं, अैसी मेरी श्रद्धा है। शरीरसे खूब काम करता हूं, फिर भी थकना तो जानता ही नहीं।"

अिस समय फूलियाकी अुमर ३९ साल है। वे दोनों और अुनके बच्चे अच्छे स्वस्थ हैं। अिस तरह परिवारका परिवार अुत्साहसे सर्वोदयके लिओ सतत प्रयत्नमें लगा हुआ है। अैसा कोओ दूसरा अुदाहरण मुझे अब तक देखनेको नहीं मिला है। रचनात्मक कार्यक्रमके दूसरे अच्छे-अच्छे कार्यकर्ता और साधक हैं। अुनके पास अच्छे-अच्छे साथी और साधन भी हैं। अपने व्यक्तिगत जीवनमें वे कितना भी सर्वोदयका पालन करते हों, लेकिन सारा परिवारका परिवार सर्वोदय जीवनमें ओतप्रोत हो, अैसा बहुत कम देखनेमें आता है। फूलिया तो अेक दूर देहातमें पड़ा है। न अुसको बहुत बड़ा सत्संग मिलता है, न वह कुछ पढ़ा-लिखा ही है। लेकिन अुसके दिलमें सर्वोदयकी निष्ठा अैसी बैठी है कि अुसके लिओ वह सब कुछ निछावर करनेको कटिबद्ध हो गया है। फूलियाका जीवन महाराष्ट्रके संत गोरा कुम्हारकी याद दिलाता है।

दूसरे भाओने बताया कि हमने फूलियाको कभी खादी पहिननेका खास आग्रह नहीं किया। अिसके मनसे ही यह सब अुत्पन्न हुआ है। फूलियाने कहा: "यहांसे ३-४ कोस पर बागपुर नामक अेक ग्राम है। वहां मेरे गुरु रहते हैं। अुनका नाम है श्योचन्द। मेरे घरमें जो कुछ भी सुधार हुआ है, वह अुनकी ही कृपा है। वे सर्व-सेवा-संघके सदस्य हैं और जब सर्वोदयकी सभा होती है, तो वहां जाया करते हैं। मैं अपने 'हरिजनसेवक' पढ़कर अुन्हें दे आता हूं।" फूलियाके अिस गुरु श्योचन्दजीसे मेरी अिच्छा होने पर भी मैं मिल नहीं सका। क्योंकि अुनका ग्राम दूर था और मेरा कार्यक्रम दूसरे ग्राम जानेका बन चुका था।

फूलियाने बताया: "मैं कभी किसी विवाह, शादी या भोज आदिमें शरीक नहीं होता। जहां पर पांच आदमीसे अधिकका भोजन और अुसमें कुछ पकवान आदि बनाये जायं, अुसमें हिस्सा नहीं लेता। जात-बिरादरीके और दूसरे लोग मेरे अूपर काफी नाराज हैं और मेरी टीका करते हैं। लेकिन मुझे जो सत्य लगता है, अुस पर अकेला ही चलनेमें मुझे किसीका भय नहीं लगता।" अिस अिलाकेमें चमारोंने मृत जानवरोंको अुठाना व चमड़ा निकालना बन्द कर दिया है। अिसलिओ लोगोंको अपने मृत जानवर स्वयं अुठाने पड़ते हैं। लेकिन वे चमड़ा नहीं निकालते, वैसे ही जमीनमें गाड़ देते हैं। अिस पर मैं लोगोंको समझा रहा था कि चमड़ा निकालना कोओ पाप नहीं है। मृत जानवरका चमड़ा न निकालें, तो हमारी बहुत बड़ी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। आखिर तो हमें चमड़ा अिस्तेमाल करना ही पड़ता है। फिर कतल किये जानवरोंका चमड़ा अिस्तेमाल

www.vinoba.in

करनेसे धन और धर्म दोनों जाते हैं। अिस पर फूलियाने बताया कि जब मेरी गाय मरी, तो अेक दूसरे भाअीकी मददसे मैंने तो अुसका चमड़ा निकाल लिया था। लोगोंने मेरा विरोध किया। मैंने कहा: "अपनेको चमड़ेकी जरूरत तो रहती ही है, सो अपने पशुओंका चमड़ा अिस तरह पशु गाड़कर बरबाद करना ठीक नहीं है।"

दूसरे सब लोग भी फूलियाके जीवनकी मुक्तकंठसे प्रशंसा करते थे। अैसे ही जहाजगढ़में फूलियाके गुरुभाअी पीरदानजी अहीरसे मिलकर खूब आनंद हुआ। ये भी बिना पढ़े हैं किन्तु 'हरिजनसेवक' सुनते हैं, और अुसमें लिखा हुआ अुनके लिअे वेद-वाक्य है। जब मैं अुनसे सुबह मिला, तो वे पीस रहे थे और शामको मिला तब कात रहे थे। पीरदानजीने बताया कि आजकल मेरा अपने घरसे असहयोग चल रहा है, कारण मेरी पुत्रवधू मिलके कपड़ेका व्यवहार करती है। अिसलिअे जब तक वह खादी नहीं पहनती, मैंने अुसके हाथका खाना-पीना बन्द कर रखा है। ये भाअी खेती करते हैं तथा दूधके लिअे घरमें गाय रखते हैं। सचमुच ही अैसे अनेक गुदड़ीके लाल सर्वोदय जीवनके पीछे पागल हैं। अुनको कोअी नहीं जानता, लेकिन अेक दिन अुनका प्रकाश तो धीरे-धीरे फैलेगा ही।

सचमुच ही फूलिया मानव-समाजको सुगंधित करनेवाला अेक सर्वोदयी फूल है।

फूलियाका गांव मारोथ, झझर तहसील, जिला रोहतकमें जहाजगढ़से चार मील दक्षिणमें है।

गोसेवा आश्रम, — बलवन्तसिंह
सीकर (राजस्थान)
२४-७-'५१

टिप्पणियां

अेक विचारप्रेरक पत्रिका

पंडित रामानन्द तिवारी बिहारके अेक भूतपूर्व सिपाही हैं। अुन्होंने हिन्दीमें "सिपाहियोंकी कहानी, आंकड़ोंकी जबानी" नामकी अेक पत्रिका लिखी है। अुसका प्रकाशन बिहार राज्य पुलिस और जेलमेन्स अेसोसियेशन, नया टोला, पटना–४ से हुआ है; और कीमत अेक आना है। यद्यपि अुसमें सिर्फ बिहारकी ही हालतका वर्णन है, लेकिन वह सारे देशके लिअे सही है; और मेरी सिफारिश है कि हमारे प्रत्येक कानून-मंत्री, पुलिसके मुख्याधिकारियों, योजना-कमिशनके सदस्यों, और राजनीतिक कार्यकर्ताओंको अुसे पढ़ना चाहिये। पत्रिका बिलकुल सरल और सीधी शैलीमें लिखी गअी है, लेकिन अुससे स्पष्ट हो जाता है कि किस तरह शासनकी रचना ही अैसी है कि वह सिपाहियोंको भ्रष्ट और बेअीमान बनने तथा लोगोंके साथ बुरी तरह पेश आने और ठगनेके लिअे प्रेरित करती है, और मनुष्यकी अपना कर्तव्य करने और लोकसेवा करनेकी सहज प्रवृत्तिको नष्ट कर देती है। अुससे यह भी पता चलता है कि अगर शासनमें स्वेच्छापूर्वक बुनियादी फर्क नहीं किया जाता, तो यह परिस्थिति साम्यवादी या क्रांतिकारी आन्दोलन पैदा करनेवाली है और अुसमें सेना तथा पुलिसके साधारण श्रेणियोंके आदमी स्थापित सरकारोंको अुखाड़ फेंकनेमें शरीक होंगे।

वर्धा, १२-८-'५१ — कि० घ० म०
(अंग्रेजीसे)

भूदानमें बढ़ती

विनोबाजीकी तेलंगाना यात्राकी पूर्णाहुतिके बाद भूदान-यज्ञ-समितिको ११०० अेकड़से ज्यादा जमीनके दान और मिले हैं। अुसमें सबसे अधिक दान ५०० और ४०० अेकड़के हैं।

दा० मूं०

सवाल–जवाब

पेस्चुराअिज्ड दूध

सवाल: अहमदाबादमें पेस्चुराअिज्ड दूधका प्रचार दिन ब दिन बढ़ रहा है। शहरकी बहुतसी दुकानोंमें ठंडा किया हुआ दूध बेचा जाता है। अेक किताबमें बापूका अभिप्राय पढ़ा था कि ताजा निकाला दूध ही संपूर्ण सत्त्ववाला होता है। समय बीतते ही अुसमें से सत्व कम होता जाता है। पर आज दोपहरको निकाला हुआ दूध यंत्रसे गरम करके तुरंत यंत्रसे ठंडा कर लेते हैं। वह दूध दूसरे दिन सुबह बिकता है और बादमें काममें लाया जाता है। अुसमें से सत्व कितना कम होता होगा?

जवाब: गायके स्तनोंसे निकले हुअे दूधको गरम करनेसे कुछ सत्व जरूर कम होता है। परंतु बादमें नीचेकी क्रिया करके रखनेमें कुछ भी ज्यादा सत्व कम नहीं होता।

दूध गायके स्तनोंसे निकलते ही कुछ कुछ बिगड़ना शुरू हो जाता है। अिसके लिअे जितना जल्दी हो सके अुसे गरम कर लेना चाहिये। गरम करनेका अर्थ है कि जो कीटाणु (बेक्टेरिया) बुरा असर डालनेवाले अथवा रोग अुत्पन्न करनेवाले दूधमें प्रवेश कर गये हों, वे सब नष्ट हो जायं। दूध गरम करनेका दूसरा प्रयोजन यह भी है कि अेक बार गरम करके ठंडा कर लेने पर और फिर रख छोड़ने पर अुसमें अशुद्ध वायु शीघ्र प्रवेश नहीं कर सकती है।

दूध तीन प्रकारसे गरम किया जाता है:

पहला यह कि दूधको किसी पात्रमें डालकर आग पर रख दो और जब १८० दर्जेकी (१८० °/F) गरमी पर पहुंच जावे, तो अिसी दर्जे पर बहुत देर तक रख छोड़ो। अिसमें दूधके अूपर धीरे-धीरे मलाअीकी तह बंधनी शुरू हो जाती है। और ज्यों-ज्यों देर होती जाती है, मलाअी भी मोटी होती जाती है। अिससे रोग अुत्पन्न करनेवाले कीटाणु दूधमें प्रवेश नहीं कर सकते।

दूसरी रीत: दूधको १८० दर्जेकी गरमी तक गरम करके तुरंत ही अुतार कर ठंडा कर लें और व्यवहारमें लानें लगें। यह विधि अत्यन्त लाभकारी है। तीसरी विधि दूध गरम करनेकी अुस अवस्थामें काममें लाअी जाती है, जब किसी कारणसे दूधको कअी दिनों तक रखनेकी आवश्यकता आ पड़े।

दूधको १८० दर्जेकी गरमी तक पहुंचा कर तुरन्त ठंडा कर लिया, फिर गरम किया और अुसी तरह ठंडा कर लिया। तीसरी बार गरम करके तुरन्त ही ६० दर्जे तक ठंडा करके रख छोड़ा। परन्तु यह दूध जिस स्थानमें रखा जावे, वहां भी ६० दर्जेसे अधिक गरमी न हो। अिस प्रकार औटाया हुआ दूध अेक सप्ताह भलीभांति रह सकता है।

जिस स्थानका टेम्परेचर (गरमी) ६० दर्जेसे कम हो, वहां दूध कभी न बिगड़ेगा। क्योंकि वहां कीटाणुका प्रभाव नहीं होता।

अधिक दूध पैदा करनेवाले केन्द्रोंमें दूध भाफसे गरम किया जाता है। अुसके लिअे अेक मशीन होती है, जिसे (Pasteurizer) पेस्चुराअिजर कहते हैं। दूध बड़ी शीघ्रतासे ठंडा करनेके लिअे भी अेक मशीन होती है, जिसे (Refrigerator) रेफ्रिजेटर कहते हैं।

गोपुरी, वर्धा — चं० पा०

विषय-सूची

		पृष्ठ
रिश्वतखोरी	कि० घ० मशरूवाला	२३३
शिवरामपल्लीमें विनोबा — १२	दा० मूं०	२३३
'अधिक अन्न नष्ट करो' आन्दोलन!	मीरा	२३५
हैदराबादका जमीनका सवाल	कि० घ० मशरूवाला	२३६
सर्वोदयी फूलिया	बलवन्तसिंह	२३७
सवाल-जवाब	चं० पा०	२४०
टिप्पणियां:		
कोढ़-कामकी तालीमें		२३५
अेक विचारप्रेरक पत्रिका	कि० घ० म०	२४०
भूदानमें बढ़ती	दा० मूं०	२४०

www.vinoba.in